10-3-67 ओम शान्ती रात्रीक्लास

भारत में भारतवासी गाते है आत्मायेंपरमात्मा अलग रहे बहुकाल... . अब बच्चे जानते है कि हम आत्माओं का बाप परमपिता हमको राजयोग सिखा रहे है। अपना परिचय दे रहे है और सृष्टी की आद मध्य अन्त का भी परिचय दे रहे है। कोई तो पक्के निश्चय बुधी है। कोई कम समझते है। नम्बरवार तो है नां। बच्चे जानते है हम जीवात्मायें परमपिता परमात्मा के सम्मुख बैठे है। यह जो गाया जाता है आत्मायें परमात्मा.. अब मूल वतन में जब आत्मायें है तब तो अलग होने की बात ही नही उठती। यहां आने से जीवात्मा जब बनती है तो परमात्मा बाप से सब अलग हो जाते है। परमपिता परमात्मा से अलग होकर यहां पार्ट बजाने आते है। आगे तो बिना अर्थ ऐसेही गाते थे। अब तो बाप बैठ समझाते है। बच्चे जानते है परमपिता परमात्मा से हम अलग हो यहां पार्ट बजाने आते हैं। तो तुम ही पहले-2 बिछड़े हो तो शिव बाबा पहले-2 तुमको ही मिलते है। तुम्हारी खातिर बाप को आना पड़ता है। कल्प पहले भी इन्ही बच्चों को ही पढ़ाया था। जो फिर स्वर्ग के मालिक बने थे। उस समय और कोई खण्ड नही था। बच्चे जानते हैं हम आदी सनातन देवी देवता धर्म के थे। जिसको डीटी रिलीजन, डीटी डायेन्स्टी भी कहते है। रिलीजन को ना माननी यह तो जैसे कि जनावर ठहरे। मनुष्य को तो हर एक को अपना रिलीजन होता है नां। रिलीजन होता ही है मनुष्य का। रिलीजन ईज़ माईट कहा जाता है नां। धर्म में ताकत रहती है। तुम बच्चे जानते हो कि यह ल-न कितनी ताकत वाले थे। भारतवासी तो अपने धर्म को ही नही जानते है। किसकी भी बुधी में नही आता है कि बरोबर भारतमें इन्ही का राज्य था। धर्म को ही नही जानने कारण इरीलीजस बन गये है। रिलीजन में आने से तुममें कितनी ताकत आती है। तुम आयरन ऐज पहाड़को उठा कर गोल्डन ऐज बना देते हो। भारत को सोने का पहाड़ बना देते हो। वहां तो खानियों में ढेर सोना पड़ा रहता है। सोने के पहाड़ होंगे जोकि फिर बीखुलेंगे। सोने को गला कर उनकी ईंटे बनाई जाती है। मकान तो बड़ी-2 ईंटो का ही बनावेंगे नां। माया मछन्दर का भी खेल दिखाते है नां। वो तो सब है कहानियां। बाप कहते है इन सबका सार मैं तुमको सुनाता हूं। दिखाते है कि ध्यान में देखा कि हम झोली भर कर ले जाते है। ध्यान से नीचे उतरा तो कुछ भी नहीरहा। जैसा तुम्हरा भी होता है नां। इसको कहा ही जाता है दिव्य दृष्टी। इसमें कुछ रखा नही है। वो भक्ति मार्ग है ही अलग। यह ज्ञान माल अलग है। रुद्र माला और विष्णु की माला है नां। वो फिर है भक्ति की माला। अब तुम पढ़ रहे हो राजाई के लिये। तुम्हरा बुधी योग है टीचर के साथ और राजाई के साथ। जैसे कालिज में पढ़ते है तो बुधी का योग टीचर के साथ रहता है। बैरिस्टर खुद पढ़ कर आप समान बनाते है। यह बाबा खुद तो बनाते नही है। यहां यही वन्डर है। तुम्हारी यह है रूहानी पढ़ाई तुम्हरा बुधी योग शिव बाबा के साथ है। इनको ही नालेज फुल ज्ञान का सागर कहा जाता है। जानी जाननहार का यह मतलब नही है कि वो सबके दिलों को बैठ जानेंगे कि इनके अन्दर क्या चल रहा है। वो तो थाट रीडर्स होते है जो सब कुछ सुनाते है। इसको ही भूत विदया कहा जाता है। यहां तो बाप पढ़ाते है मनुष्य से देवता बनाने। गायन भी है कि मनुष्य से देवता किये करत नां लागी बार। अब तुम बच्चे समझते होकि हम अभी ब्राह्मण बने है। फिर दूसरे जन्म में देवता बनेंगे। आदी सनातन देवी देवता धर्म ही गाया जाता जाता है। हिन्दु कोई धर्म था थोड़ेही। यह है मनुष्य लोक। मृत्यु लोक। सतयुग को कहा जाता है देवलोक। अमर लोक भी कहा जाता है। शास्त्रों में तो ढेर कहानियां लिख दी है। यहां तो बाप डायरेक्ट पढ़ाते है। श्रीकृष्ण भगवानोवाच। भगवान ही ज्ञान का सागर सुख का सागर शान्ती का सागरहै। तुम बच्चों को वर्सा देते है। यह है तुम्हरे 21जन्मों लिये। तो कितनी अच्छी रीती पढ़ना पड़े। यह रूहानी पढ़ाई बाप एक ही बार पढ़ाते है। नई दुनियां में इन देवी देवताओं का राज्य था। बाप कहते है मैं ब्रह्मा द्वारा आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना कर रहा हूं। जब वो धर्म था तब और कोई धर्म नही

شو بابا کا گیان کی امرت برسا - اس سلسلہ میں گیان [illegible]

था। अब और सब धर्म है इसलिये त्रिमूर्ती पर भी तुम यह समझाते हो कि ब्रहमा द्वारा स्थापना एक धर्म की। शंकर द्वारा विनाश अनेक धर्मों का। अब वो धर्म है नहीं। गाते भी है ना मुझ निर्गुण हारे में कोई गुण नाही आपही तरस पड़ोई.... हमारे मे कोई गुण नही है बुधी गाड फादर [illegible] तरफ ही जाती है। उनको ही पीसी फुल कहा जाता है। सब पर रहम करते है ना। तुम जानते हो बाबा हमारे सभी दुखी को खलास करे 100% सुख देते है। तुम समझते हो हम बाबा पास आये है तो बाप से पूरा सुख लेना है। वो तो है ही सुख धाम। अब है दुःख धाम। इस चक्र को भी अच्छी रीती समझना है। शान्ती धाम सुख धाम को याद करो। तो अन्त मते सो गते हो जावेंगे। शान्ती धाम को याद करते हो तो जरूर शरीर छोड़ना पड़े तब ही आत्मायें शान्ती धाम मे जायेगी। एक बाप के सिवा और कोई की याद नही आवे। एक दम लाईन क्लिअर चाहिये। एक बाप को ही याद करने से अन्दर खुशी का पारा चढ़ता है। इस पुरानी दुनियां मे तो अल्प काल क्षण भंगुर सुख है जो कि साथ नही चल सकता। साथ तो यह अविनाशी ज्ञान रत्न ही चलने है। माना कि ज्ञान रत्नो की कमाई ही साथ चलनी है। जो तुम फिर 2 जन्म प्रारब्ध पावेगे। हां विनाशी धन भी साथ उनका ही जाता है जो बाप की मदद करते है। बाबा हमारी यह कौड़ियां लेकर वहां हमको महल दे देना जी। बाप कौड़ियों के बदले कितने रत्न देते है। जैसे अमेरिकन लोग होते है ना पुरानी चीजे देकर नई चीजे खरीद करते है। पुरानी चीज का मनुष्य बहुत दाम ले लेते है अमेरिकन लोगों से। पाई की चीज का हजारों ले लेते है। बाबा भी कितना अच्छा ग्राहक है। भोलानाथ गाया हुआ है ना। मनुष्यों को यह भी पता नही है। वो तो शिव शंकर को एक कह देते है। इनके लिये कहते है भर दो झोली अब तुम बच्चे समझते हो तुमको ज्ञान रत्न मिल रहे है जिनसे तुम्हारी झोली भरती है। वो है बेहद का बाप। वो फिर शंकर के लिये कह देते है। धतूरा और भांग खाते है यह भी दिखाते है। कैसी-2 बाते बैठ बनाते है। भक्ति मार्ग है ही दुर्गती मार्ग। सदगती के लिये पढ़ाई तो बिल्कुल शान्ती मे रहने की है। यह बत्ती आद जलाते है शो करते है वो भी इसी लिये ही कि मनुष्य आकर पूछे। आप शिव जयन्ती इतनी क्यों मनाते है। शिव ही भारत को धनवान बनाते है ना। इन ल-न को स्वर्ग का मालिक किसने बनाया है यह तुम जानते हो। यह लक्ष्मी आगे जन्म मे कौन थी? यह आगे जन्म मे यह अगले जन्म में ज्ञान ज्ञानेश्वरी थी जो ही फिर राज राजेश्वरी बनती है। अब [illegible] किसका बड़ा है। देखने मे तो यह स्वर्ग की मालिक है। जगत-अम्बा कहां की मालिक थी? इनके पास क्यों जाते थे? ब्रहमा को भी 100 भुजाओं वाला 200 भुजाओं वाला 10000 भुजाओं वाला दिखाते है। जितने बच्चे होते जाते है उतनी ही भुजायें बढ़ती ही जाती है। देवी को भी लक्ष्मी से जास्ती भुजायें दी है। उनके पास ही जाकर सब कुछ मांगते है। बहुत आशायें ले जाते है। बच्चा चाहिये यह चाहिये वो चाहिये। लक्ष्मी पास कब ऐसे आशायें नही ले कर जावेंगे। वो तो है सिर्फ धनवान। जगत अम्बा से तो स्वर्ग की बादशाही मिलती है। यह भी कोई को पता नही है कि जगत अम्बा से क्या मांगना चाहिये। यह तो पढ़ाते है ना। जगत अम्बा क्या पढ़ाती है? राजयोग। इसको कहा ही जाता है बुधी का योग। तुम्हारी और सब तरफ से बुधी निकल कर एक की ओर ही लग जाती है। अब बाप कहते है मेरे साथ बुधी का योग लगाओ। नही तो विकर्म विनाश नही होगें। इसलिये ही बाबा फोटो निकालने भी नही देते है। यह तो इनकी देह है ना। बाप तो खुद दलाल बन कर कहते है कि अब तुम्हारा वो हथियाला कैन्सिल है। काम चिता से उतर कर अब ज्ञान चिता पर बैठो। काम चिता से उतरो। अपने को आत्मा समझो। मुझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे। और कोई मनुष्य ऐसे कह नही सकते है। मनुष्य को भगवान भी नही कहा जा सकता। तुम बच्चे जानते हो कि बापही पतित पावन है। वो ही आकर काम चिता से उतार कर ज्ञान चिता पर बिठाते है। वो है रूहानी बाप। वो इनमे बैठ कहते है तुम भी

भी आत्मा हो। औरों को भी यही समझाते रहो कि वाप कहते है मनमनाभव। मनमनाभव कहने से ही याद आ जावेगी। इस पुरानी दुनियां का विनाश भी सामने खड़ा है। वाप समझाते है यह है महाभारत महाभारि लड़ाई। लड़ाई तो विलायत मे भी होती है नां। फिर भी इसको महाभारत लड़ाई क्यों कहते है? भारत से ही निकलती है। भारत मे ही यज्ञ रचा हुआ है। उससे यह विनाश ज्वाला निकलती है। तुम्हारे लिये तो नई दुनियां चाहिये नां। तो उसके लिये पुरानी दुनियां का जरूर विनाश ही करना पड़े। तो इस लड़ाई की आग भी यहां से निकलती है। इस रूद्र यज्ञ से महाभारत महाभारी लड़ाई की विनाश ज्वाला निकलती है। भले शास्त्रों मे लिखा हुआ है परन्तु किसने कहा है? यह नही जानते है। अव वाप समझा रहे है। नई दुनियां के लिये ही अव तुम राजाई लेते हो। तुम देवता वनते हो। तुम्हारे राज्य मे और कोई भी होना नही चाहिये। डेवल वर्ल्ड का विनाश होता है। खुषी मे यह याद रहनी चाहिये कि कल्प पहले हमी ने राज्य किया था। वावा ने राज्य दिया था। फिर 84जन्म हम लेते आते है। अव फिर वावा आया हुआ है। तुम वच्चों मे यह तो ज्ञान है नां। वाप ने ही यह ज्ञान दिया है। अव डीटी धर्म की स्थापना होती है। तो वाकी सारे डेवल वर्ल्ड का विनाश हो जाता है। इसको कहते ही है शैतानी राज्य। यह वाप वैठ ब्रहमा दवारा सब वातें समझाते है। ब्रहमा भी शिव का ही वच्चा है। विष्णु का भी राज समझाया है कि ब्रहमा सो विष्णु। विष्णु सो ब्रहमा वनते है। विष्णु से ब्रहमा वनने मे 84जन्म लगते है। ब्रहमा से विष्णु वनने मे एक जन्म लगता है। अव तो समझ गये हो हम ब्राहमण है फिर देवता वनेंगें। फिर 84जन्म लेंगे। ब्राहमण से देवता वनने मे। यह 84का चक्र समझ लिया है। यह वातें और कोई समझा नही सकते। यह नालेज देने वाला एक ही वाप है। तो फिर किसी मनुष्य से मिल कैसे सकती है। इसमे सारी खुषी की वात है। वाप कहते है और सब तरफ से वुधी का योग तोड़ो। वुधी ही विगड़ती है। वाप कहते है मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगें। गृहस्थ व्यवहार मे भी भल रहो ऐम आवजैक्ट तो सामने ही खड़ा है। जानते हो कि हम पढ़ कर क्या वनेंगें। तुम्हारी पढ़ाई है ही संगम युग की। अव तुम नां तो इस तरफ हो नां ही उस तरफ हो। गाते भी है कि हमारी नैय्या पार ले जाओ। इस पर एक कहानी भी वनी हुई है। कोई चल पड़ते है, कोई रह जाते है। अव वाप कहते है मै इस ब्रहमा मुख केक मुख दवारा तुम वच्चों को वैठ सुनाता हूं। ब्रहमा कहां से आया? प्रजा पिता तो जरूर यही चाहिये नां। मै उनको ऐडाप्ट करता हूं। तुम भी ब्रहमा मुख वंशावली ब्राहमण हो। जो कलियुग अन्त मे थे वो ही फिर सतयुग आद मे जावेंगें। तुम ही पहले-2 वाप से अलग होकर पाट वजाने आये हो। तुम्हारे मे भी सव तो नही कहेंगें नां। यह भी मालूम पड़ जावेगा कि कौन पूरे 84जन्म लेते है। इन ल-न की तो हिस्ट्री है नां। इनके लिये ही गायन है श्याम सुन्दर का। देवी देवतायें सुन्दर है। सांवरे से सुन्दर वनते है। गांवड़े के छोरे से वदल कर सुन्दर वन जाते है। इस समय सव ही छोरे और छोरियां ही है। यह वेहद की वात है। इनको कोई जानते नही है। कितनी अच्छी-2 समझानी दी जाती है। हर एक के लिये सर्जन एक ही है। यह है अविनाशी सर्जन। आत्मा ही तमोप्रधान वनती है उनको ही फिर सतोप्रधान वनना है। इसके ही लिये युक्ति वताई जाती है। वाप कहते है मुझे याद करने से तुम सतोप्रधान वन जावेंगें। जितना याद करेंगें उतना ही सहज ही तुम्हारा अलाय (खाद) निकलेगा। अगर आग ठन्डी होगी तो अलाय निकलेगी नही। इनको ही योगाग्नी कहा जाता है जिससे ही विकर्म विनाश होते है। वाप कहते है तुमको कितना समझाता रहता हूं। अच्छा धारना भी तो हो नां। अच्छा मनमनाभव। इसमे तो थकना नही चाहिये नां। वाप को याद करना भी भूल जाते है। यह पतियों का पति तुमको ज्ञान से श्रृंगारते है। वाकी भगवान आद की तो वात ही नही है। भगवान कौन है यह भी जानते नही है। कृष्ण को भी भगवान कह दिया है। झूठ है नां। गीता ही झूठी तो उनके वाल वच्चे सव झूठे हो जाते है। इसीलिये ही गाते भी है कि झूठी माया झूठी काया... किस वात मे झूठ वोलते है? ...नी की वाणी नो। वावा ज्ञान सुनाते है। तो ... सुनाते है। कृष्ण नही यह तो वाप ही कहते है ...